आदिवासी काष्ठ शिल्प का कलात्मक अध्ययन

सन्दर्भ जनजातीय संग्रहालय (भोपाल)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा से
चित्रकला में पी–एच॰डी॰ की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2014

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतु

प्रो० रागिनी रॉय,
अध्यक्ष ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग,
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध निर्देशक

प्रो० अश्विनी कुमार शर्मा,
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग,
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा

नीतू यादव
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग विभाग
कला संकाय,
डी०ई०आई० डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा

<u>आदिवासी काष्ठ शिल्प का कलात्मक अध्ययन सन्दर्भ जनजातीय संग्रहालय (भोपाल, म॰प्र॰)</u>

<u>विषय सूची :–</u>

शोध संकल्पना

साहित्यिक पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली :–

1–अनुसंधान अभिकल्प

2–प्रदत्त संकलन

अ–प्राथमिक

ब–द्वितीयक

3–प्रतिदर्श

4–साक्षात्कार

5–प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

6–सीमा

निष्कर्ष

भारत में मध्य प्रदेश व मध्य प्रदेश मे भोपाल की स्थिति

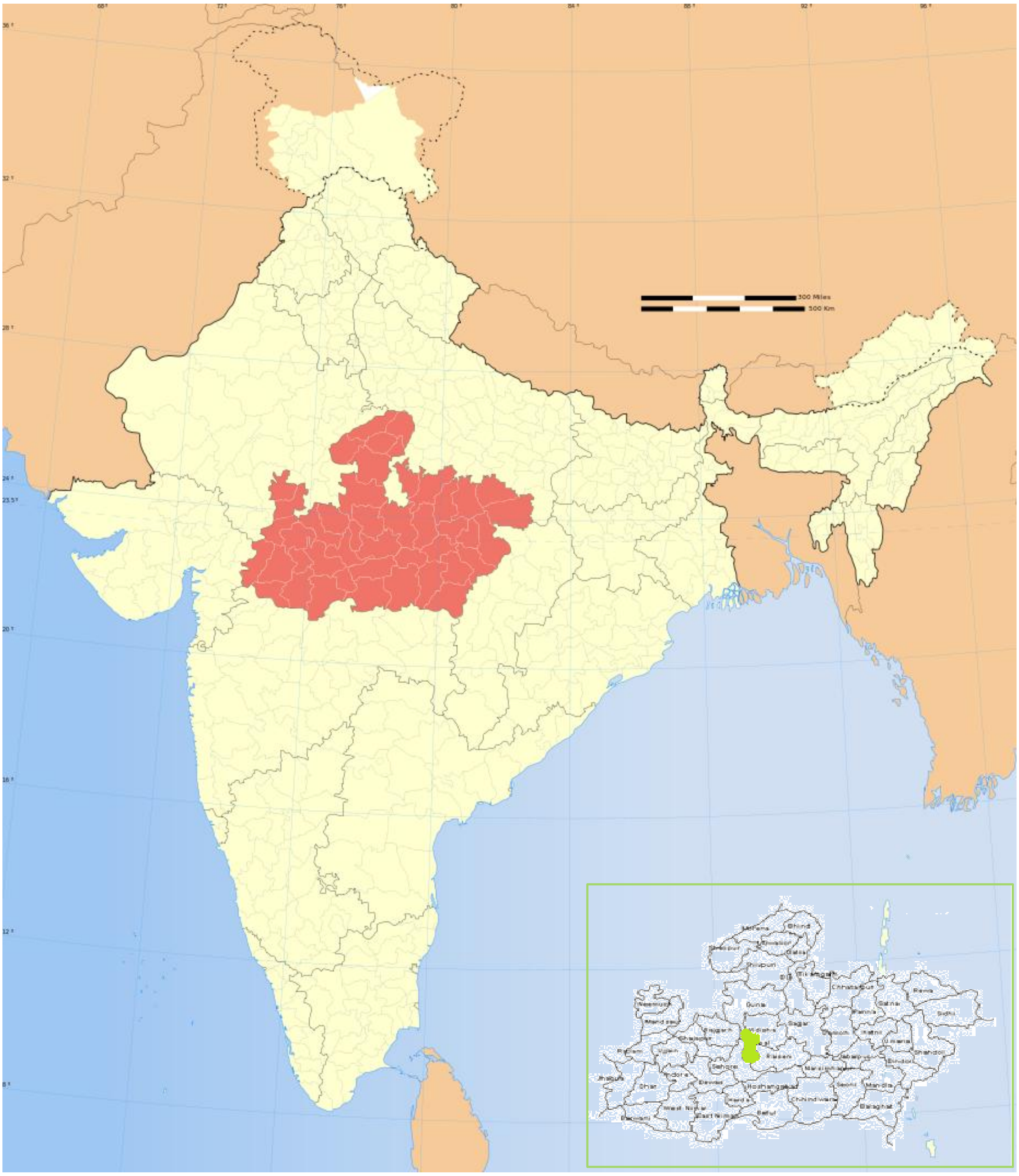

मध्य प्रदेश   भोपाल

शोध संकल्पना :–

विद्या और कला के विषय में "शुक्राचार्य" ने बहुत ही स्पष्ट लिखा है, कि विद्या अनन्त है, कलाओं की तो गिनती ही नहीं की जा सकती। फिर भी सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्याएँ बत्तीस और कलाएँ चौंसठ है। आगे चलकर उन्होंने कहा है कि वाणी के माध्यम से जो व्यक्त हो वह विद्या है, और गूँगा भी जिसे व्यक्त कर सके वह कला, शिल्प, नृत्य, चित्र आदि कलाएँ हैं, क्योंकि ये बिना वाणी के मूक भाषा से व्यक्त की जा सकती है।

आदि काल से मानव अपने आन्तरिक व बाह्य सौन्दर्य को कला व शिल्प के माध्यम से भावों को व्यक्त करता आया है। मानव निर्मित शिल्पाकृतियाँ केवल सौन्दर्य को ही अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि मनुष्य की समूची कला और संस्कृति की संवाहक है।

गुहा से निकल कर जब मनुष्य झोपड़ी बनाकर रहने लगा तब से भित्ती और काष्ठ कला उद्भव की परिकल्पना की जा सकती है। लकड़ी के पहिये के आविष्कार से मानव के विकास की गति और अधिक बढ़ी गृह निर्माण के साथ–साथ हिंसक पशुओं से बचने के लिये कारगर औजारों का निर्माण किया। सिन्धु कालीन बने भवनों में भी लकड़ी का प्रयोग मिलता है। काष्ठ निर्मित वस्तु शीघ्र नष्ट हो जाने के कारण इसका प्रमाण प्राप्त नहीं है। कई पौराणिक महाकाव्यों और पुराणों में भी काष्ठ की महत्ता का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद के अनुसार ''लकड़ी ही ऐसी वस्तु थी'' जिसकी सहायता से सर्वप्रथम विश्वकर्मा के द्वारा सृष्टि की रचना की गई।''

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष
आस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः।
–ऋग्वेदः म० 10/81/4

अर्थात् किस वन की कौन–सी लकड़ी से द्यावा (द्युलोक) पृथ्वी बनायी जाये।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की काष्ठ कला की प्राचीनता व उत्कृष्टता के सम्बन्ध में देखा जाये तो इसका साक्ष्य हमें, **'महाराष्ट्र की कार्ले गुफा'** के बड़े चैत्यों में से एक के प्रवेश द्वार की चौखट पर उत्कीर्ण शिल्प से मिलता है जिससे भारतीय काष्ठ कला की उत्कृष्टता का अनुमान लगाया जा सकता है।

विश्व के प्राचीन भवनों और मन्दिरों के स्थापत्य में पत्थर के साथ काष्ठ की मूर्तियों और अलंकरण आदि का चरम वैभव देखा जा सकता है। प्राचीन सभ्यताओं में लकड़ी और पत्थर के स्वतन्त्र और मिले–जुले स्थापत्य के कई अवशेष मिले हैं। जिनमें लकड़ी के भवन, मूर्तियाँ, अलंकरण, उपकरण आदि हैं। बौद्ध धर्म के मन्दिरों (पैगोडा) का स्थापत्य पूर्णतया लकड़ी पर निर्भर है। काष्ठ शिल्पकला में भारतीय धार्मिकता के विभिन्न मिथकीय रूपों को उत्कीर्ण किया जाता रहा है। कई देवी–देवताओं की मूर्तियाँ भी काष्ठ से निर्मित हुई है।

आदिम समूहों में विभिन्न अभिप्रायों और सृजनात्मक रूपाकार उकेरने की प्रवृत्ति सहज रूप में देखी जा सकती है। आदिवासी शिल्पकार पारम्परिक सृजनात्मकता के द्वारा सदियों से काष्ठ के विभिन्न रूपाकारों को बनाते, सजाते, सँवारते आ रहे हैं। वे अपने सृजन से समाज के धार्मिक अनुष्ठानिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं कलात्मक उत्तरदायित्व को बखूबी निभाते आये हैं। जीवन के विभिन्न अवसरों में काष्ठ शिल्प के विविध रूप सामने आये हैं। आदिम काष्ठ कला का ऐसा ही अद्भुत स्वरूप मैंने **मध्य प्रदेश** की राजधानी **भोपाल** की खूबसूरत पहाड़ी **श्यामला हिल्स** पर स्थित **जनजातीय संग्रहालय** में उकेरी गई अनन्य (इनके जैसी अन्यत्र नहीं) काष्ठ शिल्पों में देखा।

जनजातीय संग्रहालय, भोपाल का लोकार्पण समारोह **6 जून 2013** को भारत के महामहिम **राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी** के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया गया, यह मध्य प्रदेश के जनजातीय

वासियों के लिये एक ऐतिहासिक दिन बन गया। इस संग्रहालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य आदिम जनजातीय समाज को समग्रता से देखकर उनके कलात्मक जीवन दृष्टि को और अधिक नजदीक से जानने की कोशिश करना तथा इसके माध्यम से मध्य प्रदेश में रहने वाले जनजातीय समूहों की कला, संस्कृति, परम्परा और जीवनोपयोगी शिल्पाकृतियों, रहन–सहन तथा रीति–रिवाजों को प्रदर्शित करना ताकि यहाँ आने वाले जिज्ञासू, दर्शक, शोधार्थी एक साथ पूरे प्रदेश की समृद्ध आदिवासी संस्कृति और कला परम्परा से परिचित हो सके। संग्रहालय की पाँच बड़ी विथिकाओं में कला संयोजन का कार्य वरिष्ठ चित्रकार **श्री हर चन्दन सिंह भट्टी** के निर्देशन में हुआ।

जनजातीय संग्रहालय मध्य प्रदेश की 43 जनजातियों की कला परम्परा पर केन्द्रित है। जिसमें गौण्ड, बैगा, भील, कोरकू, सहरिया, भारिया और कोल सात जनजातियों की कला व जीवन शैली को प्रमुखता से उद्घाटित किया गया है। जनजातीय समूह ने अपने परिवेश में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों से अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। जनजातीयों में पीढ़ियों से एक सौन्दर्य बोध विकसित रहा है बल्कि यह कहना सर्वथा उपयुक्त होगा कि आदिम समय से ही इन समूहों में सौन्दर्य संस्कार में समा गया है। इसलिये किसी वस्तु को सजाये बिना कोई भी आदिवासी संतुष्टि नहीं पाते। अपनी जातीय स्मृति रूपाकारों और अभिप्रायों को आदिवासी अपनी शिल्पाकृतियों में उतारता है। अनुष्ठानों में लगने वाली मूर्तियों तथा अलंकरणों को प्रत्येक आदिवासी अपनी परम्परा व रीति–रिवाजों के अनुसार वर्तमान में भी बनाता आ रहा है। मध्य प्रदेश की जनजातीय कला अत्यन्त समृद्ध है, उसकी विविधता देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

साहित्यिक पुनरावलोकन :–

अपने शोध विषय चयन हेतु मैंने विभिन्न स्थानों एवं संग्रहालयों का भ्रमण किया, जिसके दौरान मैंने वाराणसी स्थित सारनाथ संग्रहालय एवं राम नगर के किले का अवलोकन किया परन्तु वहाँ मुझे अपने शोध विषय हेतु उपयुक्त सामग्री प्राप्त नहीं हुई तदोपरान्त मैंने अपने शोध विषय के चयन हेतु मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित **''इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय संग्रहालय''** एवं **राज्य संग्रहालय** का अवलोकन किया, जिसके दौरान मुझे **''जनजातीय संग्रहालय''** के विषय में जानकारी प्राप्त हुई, वहाँ मुझे आदिम जनजातियों द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की शिल्पाकृतियों जैसे– टेराकोटा, धातु, काष्ठ (लकड़ी) आदि का अद्भुत संग्रह दिखा, जिसमें से काष्ठ शिल्पाकृतियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित व आकर्षित किया। जनजातीय व काष्ठ शिल्प कला से सम्बन्धित और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु मैंने वहाँ के अधिकारियों से वार्तालाप की व काष्ठशिल्प से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों जैसे– ''**महेन्द्र चन्द्र शाडिल्य** की **काष्ठ शिल्प**'', ''**प्रेम चन्द्र विश्वकर्मा** की **काष्ठ एवं धातु मूर्तिकला**'', ''**J. Swaminathan** की **The Perceiving Fingers**'' व ''**कपिल तिवारी** की **सम्पदा** तथा **प्रतिरूप**'' आदि का अध्ययन किया। जिसके पश्चात् मैंने अपने शोध विषय के रूप में **''आदिवासी काष्ठ शिल्प का कलात्मक अध्ययन सन्दर्भ जनजातीय संग्रहालय (भोपाल)''** का चयन किया।

परिकल्पना :–

मैंने भोपाल स्थित **जनजातीय संग्रहालय** में प्रदर्शित विभिन्न प्रकार की शिल्पाकृतियों को देखा जो मुझे सम्पूर्ण जनजातीय जीवन संस्कृति के दर्शाते हैं, जिसे देखने के पश्चात् मुझे जनजातीय कला परम्परा को और अधिक जानने की जिज्ञासा हुई। इसलिये मैंने अपने शोध हेतु इस विषय को चुना। जिसमें मैं आदिम जनजातीय काष्ठ शिल्प का कलात्मक अध्ययन करने के साथ–साथ काष्ठ शिल्प से जुड़े विभिन्न आदिवासी कलाकारों के साक्षात्कार के द्वारा इस कला के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहूँगी। इस कार्य से सम्बन्धित अन्य स्थानीय कलाकारों से मिलूँगी और जानकारी प्राप्त करूँगी।

उद्देश्य :–

काष्ठ शिल्प अलंकरण एवं जनजातीय संस्कृति कला परम्परा पर आधारित काष्ठ शिल्प से मैं अत्यधिक प्रभावित हुई, तथा ये जानकारी भी प्राप्त की कि इन काष्ठ शिल्पाकृतियों पर अभी तक किसी ने भी शोध कार्य नहीं किया है और मैंने इन काष्ठ शिल्पों पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया। एक

कारण यह भी था कि चित्रकला व मूर्तिकला आदि पर बहुत शोध कार्य हुआ है परन्तु काष्ठ शिल्प उपेक्षित रहा। कुछ नया करने की इच्छा व इसके नवीनीकरण ने मुझे इस पर कार्य करने के लिये प्रेरित किया। जनजातियों के सांस्कृतिक परिवेश में काष्ठ शिल्प कला का क्या महत्व है? इसे मैं अपने शोध कार्य के दौरान खोजने का प्रयास करूँगी।

चर :–

1– आदिवासी कलाकार

2– कला शिक्षक

3– कला विद्यार्थी

4– कला प्रशंसक एवं कला समीक्षक

5– सहपाठी

6– संग्रहालय के अधिकारी

7– कला संग्रहकर्ता

8– पुस्तकें

9– विवरणिका (कैटलॉग)

10– इन्टरनेट

कार्य प्रणाली :–

अ– **अनुसंधान अभिकल्प–** मेरा शोध कार्य संग्रहालय में संग्रहित जनजातीय कलाकारों की काष्ठ शिल्पाकृतियों का दृश्यात्मक कलात्मक व समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

ब– **प्रदत्त संकलन–**

प्राथमिक – संग्रहालय में संग्रहित मौलिक शिल्पाकृतियाँ व कलाकारों के कार्य स्थल होंगे।

द्वितीयक– साक्षात्कार, लेख, पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, बेब–साइट्स, जरनल्स व काष्ठ शिल्प के संग्रहकर्ता आदि।

स– **प्रतिदर्श–** मेरे द्वारा संग्रहालय से लगभग 100–150 विभिन्न काष्ठ शिल्पाकृतियों का चयन कर किया जायेगा। ये काष्ठ शिल्पाकृतियाँ जनजातीय कला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेगीं।

द– **साक्षात्कार–** कलाकारों, कला समीक्षकों व कला विद्वानों का साक्षात्कार ।

य– **प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया –** मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया शिल्पाकृतियों, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होगी।

र– **सीमा–** प्रत्येक शोध कार्य की एक सीमा होती है। यह शोध स्थानीय कलाकारों एवं कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, जरनल्स, संग्रहालय, कैटलॉग आदि पर आधारित है।

आदिवासी काष्ठ शिल्प का कलात्मक अध्ययन सन्दर्भ जनजातीय संग्रहालय (भोपाल, म०प्र०)

शोध संरचना

भूमिका :– काष्ठ शिल्प कला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

अध्याय प्रथम :– मध्य प्रदेश में आदिवासी जनजातीय लोगों की ऐतिहासिकता व संस्कृति का अध्ययन

अध्याय द्वितीय :– आदिवासी जनजातीय संग्रहालय का परिचय

2.1– टेराकोटा

2.2– धातु शिल्प

2.3– काष्ठ शिल्प

2.4– अन्य

अध्याय तृतीय :– मध्य प्रदेश में आदिवासी जनजातीय संग्रहालय के प्रमुख काष्ठ कलाकारों का जातिगत आाधार पर व्यक्तिगत परिचय

3.1– गौण्ड

3.2– भील

3.3– बैगा

3.4– कोरकू

3.5– भारिया

3.6– काष्ठ कला प्रेरणा स्त्रोत

अध्याय चतुर्थ :– आदिवासी जनजातीय संग्रहालय में संग्रहित काष्ठ शिल्पाकृतियों का विषयवस्तु अनुसार वर्गीकरण

4.1 – धार्मिक शिल्प

4.2 – पारम्परिक शिल्प

4.3 – सामाजिक शिल्प

अध्याय पंचम :– मध्य प्रदेश में आदिवासी जनजातीय संग्रहालय में प्रमुख काष्ठ शिल्प का कलात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन

5.1 – व्यक्तिगत काष्ठ कला के आधार पर

5.2 – धार्मिक व पौराणिक काष्ठ शिल्प कला के आधार पर

5.3 – सामाजिक काष्ठ शिल्प कला के आधार पर

अध्याय षष्ठम :– आदिवासी जनजातीय काष्ठ कलाकृतियों की तकनीक व माध्यम का अध्ययन

अध्याय सप्तम :– आदिवासी जनजातीय काष्ठ कलाकृतियों का आधुनिक समय में महत्व व व्यवसायीकरण

उपसंहार

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u> :–

- चित्र सूची
- हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ
- Biblography
- शोध पत्र–पत्रिकाऐं
- सूचिपत्र (कैटलॉग)
- वेब–साइट्स

<u>परिशिष्ट</u> :–

- कलाकारों से साक्षात्कार
- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार
- तकनीक शब्दों का अर्थ
- समाचार पत्र

काष्ठ शिल्प का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मनुष्य का काष्ठ से अटूट सम्बन्ध रहा है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त विविध रूपों में काष्ठ का उपयोग सर्वविदित है। काष्ठ की उपयोगिता को समझकर पूर्वकाल से वर्तमान काल तक इसका उपयोग किसी न किसी रूप में होता आ रहा है। आदिमानव ने अपनी आत्म रक्षा हेतु पत्थर तथा लकड़ी के कारगर औजारों का निर्माण किया ऐसी ही कुछ सामग्री **''शिवालिक''** की पहाड़ियों, **उत्तर–पश्चिम पंजाब, जम्मू, पूंछ** आदि स्थानों से प्राप्त हुई है। विद्वानों ने इस सामग्री को **पाँच लाख वर्ष** प्राचीन बताया है। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर ''पाषाण युग मानव द्वारा काष्ठ उपयोग का आरम्भिक काल'' माना जाता है। **वैदिक काल** से लेकर **आधुनिक काल** तक काष्ठ कला की उत्कृष्टता के प्रमाण मिलते हैं। अधिकांश जनजातियों का इतिहास 19वीं शती से पूर्व का उपलब्ध नहीं है। भारतीय तथा पश्चिमी विद्वानों ने 19वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में विभिन्न जातियों पर किये गये शोध से कई स्थानों पर काष्ठ कला के प्रमाण प्राप्त किये हैं। जनजातीय समूह में भी उनके ईष्ट देवी–देवताओं की मूर्तियाँ काष्ठ से निर्मित होती हैं। काष्ठ कला में जिन अलंकरणों व प्रतीक चिन्हों का

प्रयोग किया जाता था वे उस समय के किसी न किसी धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक सरोकारों से जुड़े होते थे। आज भी यह प्रथा आदिवासी जनजातीय काष्ठ शिल्पों में देखी जा सकती है, जो अपनी वर्षों पुरानी परम्परा को जीवित रखे हैं। आज भी काष्ठ का प्रयोग बहुआयामी रूप में देखने को मिलता है चाहे वह दैनिक उपयोग की वस्तुयें हों या फिर मूर्ति शिल्प या वास्तु सम्बद्ध।

प्रथम अध्याय मध्य प्रदेश बहुसंख्य आदिवासी जनजातियों व लोक समाजों का घर है। यहाँ आधे से अधिक भाग में आदिवासी निवास करते हैं। जिनमें गौण्ड, भील, कोरकू, बैगा संख्या में अधिक हैं सभी अपनी संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से हस्तान्तरित करते आ रहे हैं। आदिवासियों का प्रकृति और पितरों पर कल्पनात्मक व मिथकीय रूप से अटूट विश्वास सदियों से चला आ रहा है जो उनके लोक नृत्य–संगीत, शिल्प चित्रों, टोटम चिन्हों आदि के द्वारा उनकी संस्कृति के रूप मे परिलक्षित होता है, जिसका प्रमाण प्रागैतिहासिक काल के शिला चित्रों व भित्ति चित्रों में दृष्टव्य होता है। इनकी संस्कृति ही इनके जीवन की अनमोल धरोहर है। इनकी प्रत्येक रचना में इनके जातीय चिन्ह मौजूद रहते हैं। मैं अपने इस अध्याय के अन्तर्गत आदिवासी जनजातियों के इतिहास व सांस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन करूँगी।

द्वितीय अध्याय जनजातीय जीवन देशज ज्ञान परम्परा और सौन्दर्यबोध पर केन्द्रित **मध्य प्रदेश** में **आदिवासी जनजातीय संग्रहालय** की स्थापना **6 जून 2013** को **आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल** के द्वारा हुई। संग्रहालय प्रदेश की 43 जनजातियों की कला परम्परा पर केन्द्रित है। जिनमें गौण्ड, बैगा, भील, कोरकू, सहरिया और कोल सात जनजाति की जीवन कला परम्परा को प्रमुखता दी गई है। सात बड़ी विथिकाओं में आदिवासी जनजातीय जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक, संस्कृतिक कला और वाचिक परम्परा को उनके वातावरण के अनुरूप अपने परिवेश में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों द्वारा आदिवासी कलाकारों ने स्वयं निर्मित किया है। इन सभी का विस्तार पूर्वक अध्ययन मैं इस अध्याय में करूँगी।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत काष्ठ शिल्प कला का कार्य करने वाले पाँच आदिवासी जनजातीय (गौण्ड, भील, बैगा, कोरकू, भारिया) कलाकारों का जातिगत आधार पर व्यक्तिगत परिचय देते हुये, काष्ठ कला प्रेरणा स्त्रोत आदि के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु होगा।

चतुर्थ अध्याय के माध्यम से संग्रहालय में संग्रहीत काष्ठ कला की शिल्पाकृतियों की विषयवस्तु अनुसार वर्गीकरण करके धार्मिक, पारम्परिक एवं सामाजिक आदि विभिन्न वर्गों में निर्मित कलाकृतियों का अध्ययन करना है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत संग्रहालय में संग्रहीत व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक एवं पौराणिक विषयों के आधार पर निर्मित काष्ठ शिल्पों का कलात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन करूँगी।

षष्ठम अध्याय के अन्तर्गत आदिवासी जनजातीय काष्ठ कलाकृतियों की तकनीकि व माध्यम एवं शिल्प के लिये काष्ठ का चयन व प्रयुक्त होने वाले विभिन्न औजारों का सविस्तार विवरण प्रस्तुत करूँगी।

सप्तम अध्याय में काष्ठ शिल्पाकृतियों का आधुनिक युग में क्या महत्व है? इसकी क्या उपयोगिता है? कला व्यवसायीकरण में काष्ठ शिल्पाकृतियों की क्या स्थिति है? काष्ठ शिल्प कलाकारों की आधुनिक समय में क्या स्थिति है? आदि प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूँगी।

उपसंहार के अन्तर्गत आदिम जनजातियों द्वारा कृत कलाकृतियों के प्रति उनके भावात्मक पक्ष व कलात्मक पक्ष को जनसाधारण को बताना है। आदिम जनजातीय काष्ठ शिल्पकला के सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण का आधुनिक कला पर होने वाले प्रभाव व वर्तमान में व्यवसायीकरण की सम्भावनाओं को तलाशना है।

दिनाँक :– 22.09.2014 **नीतू यादव**

शोध छात्रा

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण : 1966, भारतीय *कला,* पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी।
2. एलविन, वोरियर : *गौण्ड एक जीवन,* राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., भोपाल।
3. एलविन, वेरियर : 2008, *जनजातीय मिथक,* आदिम जनजातीय कल्याण विभाग, वान्या प्रकाशन, आदिवासी विभाग, नई दिल्ली।
4. उपाध्याय, वासुदेव : 1982, *प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान,* चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
5. उपाध्याय, भगवत शरण : 1981, *भारतीय कला इतिहास,* पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली।
6. ग्रिडसन, डब्ल्यू. वी. : *मध्य प्रदेश बरार में आदिवासी समस्यायें* वान्या प्रकाशन, आदिम जाति कल्याण विभाग, भोपाल।
7. गुप्ता, नीलिमा : *भारतीय लोक कला,* स्वाती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. गुप्त, जगदीश : *प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला,* नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
9. घोष, इला : 2004, *संस्कृत वाङ्मय में शिल्प कलायें,* ईस्टन बुक लिंक्स, दिल्ली।
10. चट्टोपाध्याय, कमला देवी : *भारतीय हस्त शिल्प परम्परा,* सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार पटियाला हाऊस, नई दिल्ली।
11. चन्द्रिकेश, जगदीश : *वैदिक साहित्य में कला (चित्र, मूर्ति एवं वास्तु का प्रारूप और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि)।*
12. चौरसिया, विजय : *आख्यान,* आदिवासी लोककला अकादमी, म. प्र. संस्कृति परिषद्, भोपाल।
13. जोशी, महादेव प्रसाद : 1989, *हमारी संस्कृति के प्रतीक,* सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
14. तिवारी, कपिल : 2010, *सम्पदा,* आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल।
15. तिवारी, कपिल : 1994, *प्रतिरूप,* मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, म. प्र.।
16. तिवारी, शिव कुमार : 2008, *चरितानि राजगोडानम्,* राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली।
17. पलीवाल, चन्द्रमोहन : *आदिवासी हरिजन–आर्थिक विकास (बस्तर जिले के सन्दर्भ में),* नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली।

18. भावसागर, वीरबाला : *आदिवासी कला,* सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली।

19. माथुर, कमलेश : 1997, *हस्त शिल्प कला के विविध आयाम,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

20. विश्वकर्मा, प्रेमचन्द्र : 2007,*काष्ठ एवं धातु मूर्तिकला,* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

21. शुक्ल, ध्रुव : 2009, *भगोरिया (भालों का मदनोत्सव),* वान्या प्रकाशन आदिम जनजातीय कल्याण विभाग, भोपाल।

22. शाडिल्य, महेशचन्द्र : 1996, *काष्ठ कला,* मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल।

23. शेख, गुलाब : *गौण्ड,* मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, म. प्र.।

24. सोमपुरा, प्रभाशंकर ओ. : 1975, *भारतीय शिल्प संहिता,* बम्बई।

25. त्रिवेदी, राजे” वर : *बैगा,* वान्या आदिम जाति कल्याण विभाग, भोपाल।

BIBLIOGRAPHY

1. Abraham, T. M. : 1964, *Handicrafts in India*, New Delhi.
2. Bajpayi, Udyan : 2008, *Narrative of a Tradition-Gond Paintings,* Tribal welfare department, M.P.
3. Bhawani, Enakshi : *Decorative Desighs on Stone And Wood in India*, Bombay.
4. Busabil, Mareao : 1971, *5000 years of the Art of India,* New York.
5. Havel, E.B. : 1920, *A Hand Book of India Arts*, John Murry, London.
6. Humbert, Claude : 1970, *Ornamental Design*, Great Britain.
7. Kajmasan, Hani N. : *A Text Book of creative Design*.
8. Mehta, Rustum J. : 1960, *Handicrafts And Industrial Arts of India*, Taaperevala, Bombay.
9. Michell, Gearge : *Living Wood (Sculptural Traditions of Southern, India)*, Mary Publications, Bombay.
10. Misra, Umesh Chandra : 1984, *Tribal Paintings and Sculptures,* P.K. Published Distributars P. Ltd., Delhi.
11. RAE T. John : 1971, *Art and Craft for Children*, Published by Methuen Educational Ltd., London.
12. Shah, Shampa : *Tribal Arts and Crafts of Madhya Pradesh*, Vanya Prakashan, Bhopal.
13. Swaminathan, J. : 1987, *The Preceiving Fingures*, All India Handi Crafts Board, New Delhi.
14. Swarup, Shanti : 1957, *The Art and Craft of India Pakistan*, Bombay.
15. Trived, K.K. : 1961, *Wood Caring of Gujrat census of India*, Vol. vth part viii, Gujrat.

पत्र–पत्रिकाऐं

1. फरवरी–मई, 2002, समकालीन कला, अंक– 21.
2. जुलाई–अक्टूबर, 2011 वर्ष– 28, संयुक्तांक–86/87.
3. अप्रैल, 2013, पूर्वाग्रह, अंक– 14.
4. जून, 2013, चौमासा।
5. अक्टूबर, 2013, कला दीर्घा, अंक– 27.
6. अप्रैल, 2014, कला दीर्घा, वर्ष–14, अंक– 28.
7. अक्टूबर, 2014, कला समय।
8. जून, 7, 2013, स्वदेश।
9. जून, 7, 2013, नवभारत।
10. जून, 7, 2013, नई दुनिया।
11. जून, 7, 2013, दैनिक भास्कर।
12. जून, 7, 2013, Times of India.

WEBSITES

1. www.timesofindiatravel.com/madhya-pradesh-map.html
2. www.en.wikipedia.org/wiki/Madhya_Pradesh
3. www.mptribalmeseum.com
4. www.en.wikipedia.org/wiki/Tribals_in_Madhya_Pradesh
5. www.refelctionsofondia.com/2014/02/25/madhys-pradesh-tribal-meseum/#jp-carausel.719
6. www.article.wn.com/view/2014/04/14In_a_tribe_of_its_own/
7. www.indiantribalheritage.org/?p=12031
8. www.malikaverma.blogspot.in/2014/02/mp-tribal-meseum-bhopal-few-glimpse.html

चित्र सं. 1 जनजातीय संग्रहालय, भोपाल (म.प्र.) का मुख्य द्वार

चित्र सं. 2 गौण्ड जनजाति द्वारा निर्मित मावली
माता का झूला

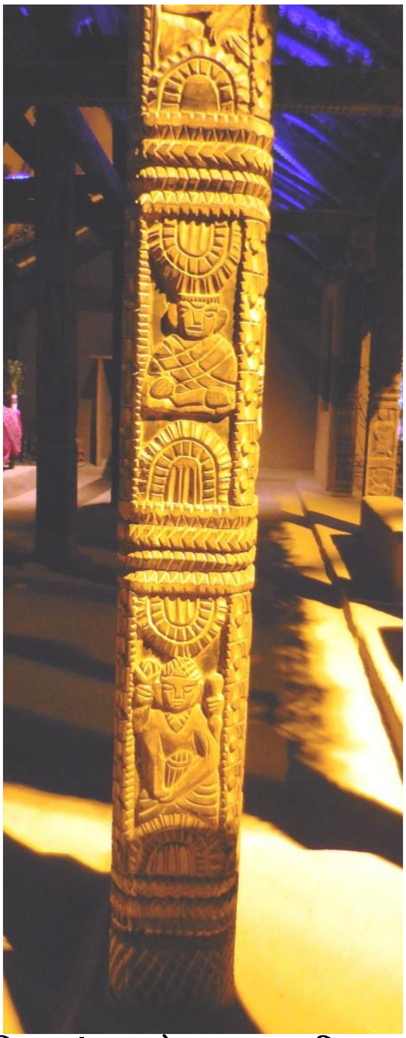

चित्र सं. 3 कोरकू जनजाति द्वारा
निर्मित स्मृति स्तम्भ

चित्र सं. 4 भील जनजाति द्वारा निर्मित मुखौटे

चित्र सं. 5 बैगा जनजाति द्वारा निर्मित मगरोहन

चित्र सं. 6 भारिया जनजाति द्वारा निर्मित कलात्मक दरवाजे